यह एक बहुत ही श्लाघनीय कार्य है जो डॉ. भावना सावलिया और डॉ. मोहमद हफीज अब्दुल हमीद कठियारा ने एक शोध-पत्रात्मक पुस्तक को प्रकाशित करने का संकल्प लिया। जिसमें अन्यान्य विषयों पर अनुसन्धानात्मक आलेख निबद्ध किए गए हैं। निःसन्देह दोनों भूरि-भूरि प्रशंसा के पात्र हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में साहित्यिक और सामाजिक विज्ञान से सम्बन्धित अनेकशः ऐसे शोध-आलेख हैं जिनमें रचनाकारों ने अपने अनुसन्धानात्मक कौशल से अपनी अमूर्त अन्तर्दृष्टि को मूर्त रूप में आकलित किया है। मैं आशा करता हूँ कि यह पुस्तक उन शोध-युक्त आन्वीक्षिकी की परिकल्पनाओं से शोधार्थियों के लिए अवश्य एक सन्दर्भ-ग्रन्थ रूप में सहायक होगी। प्रस्तुत शोध-पत्रात्मक पुस्तक में सम्मिलित रचनाकारों ने हिन्दी साहित्य एवं अन्य सामाजिक विषयों पर प्रकाशित पुस्तकों के सन्दर्भ में जो भी सूक्ष्म अनुभवों को एकत्रित कर एक सारगर्भित रूप दिया है वह निश्चित ही तत्सम्बन्धित क्षेत्र में उपादेय सिद्ध होगा। इन्हीं शुभेच्छाओं के साथ...

- डॉ. चन्द्रपालसिंह यादव

डॉ. भावना एन. सावलिया

पता : हरमडिया, वाया, ता. गोंडल, जिला-राजकोट, सौराष्ट्र (गुजरात) मोबाइल/व्हाट्सअप : 8849842456, ईमेल : savaliabhavna501@gmail, शिक्षा : M.A., M.Phil., Ph. D., GSET. सम्प्रति : प्रोफेसर, आर्ट्स कॉलेज मोडासा, जिला अरवल्ली, गुजरात

प्रकाशित पुस्तकें : (1) 'महादेवी वर्मा के समग्र साहित्य में नारी चेतना' (2) 'कविता सागर' काव्य संग्रह (3) 'जब से प्यार हुई है अँखियाँ' (छन्दबद्ध काव्य संग्रह) (4) 'लौट आओ प्रिय अपने देश' (गीत संग्रह) (दोनों कृतियाँ गुजरात साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित) (5) संपादन : समकालीन विमर्श में वर्तमान हिन्दी काव्य (सप्तकवि-काव्य- संकलन-1, 2, 3)' अंतर्राष्ट्रीय अवार्ड : १, राष्ट्रीय सम्मान और पुरस्कार : २०, कहानी प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर रू. 21000/- का पुरस्कार, साहित्य-वारिधि, साहित्य शिरोमणि, साहित्य वाचस्पति, छन्दालंकार, छन्द-शिल्पी, छन्द-प्रभा, छन्द-शिरोमणि आदि उपाधि से पुरस्कृत, 'राज्य स्तर पर 'कवि रत्न' और साहित्य साधना अवार्ड।

Dr. Mohmedhafiz Abdulhamid Kathiyara

I have done MA, B.Ed, M. Phil and PhD in Psychology subject and have also done Post Graduate Diploma in Counseling Psychology. I am a Gold Medalist in Clinical Psychology. I have done my studies from Gujarat University and PhD from Dr B.A.O.U., Gujarat. Till date I have written 9 books. Have presented research papers in international and national level seminars and conferences. I have a total of 20 years of experience in the teaching field.

Also available on: amazon.in

Shubhanjali Prakashan

₹=550/-

भाषा-साहित्य एवं सामाजिक विज्ञान में शोध (अनुसन्धान) ● सम्पादक द्वय : डॉ. भावना एन. सावलिया Dr. Mohmedhafiz Abdulhamid

भाषा-साहित्य एवं सामाजिक विज्ञान में शोध (अनुसन्धान)

Research In Linguistic Literature And Social Science

सम्पादक द्वय

डॉ. भावना एन. सावलिया

Dr. Mohmedhafiz Abdulhamid Kathiyara

प्रकाशन : अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य संस्थान,

गुजरात, अहमदाबाद

सरस्वती वन्दना (त्रिभंगी छन्द)

माँ हाथ जोड़कर, स्वार्थ छोड़कर,
तेरे वंदन, करते हैं।
माँ दर्श तुम्हारा, लगता प्यारा,
संकट पल में, हरते हैं।

हे ज्ञान दायिनी, वेद धारिणी,
निर्मल मन को कर देना।
अज्ञान मिटाकर, ज्ञान सुनाकर,
प्रांजल प्रज्ञा, भर देना।
जो द्वार तुम्हारे, आते प्यारे,
उसकी झोली भरते हैं।
माँ दर्श तुम्हारा, लगता प्यारा,
संकट पल में, हरते हैं।

झंकार करो माँ, कष्ट हरो माँ, चेतना जगा, दो मन में।
उत्थान करें हम, शक्ति न हो कम, आस यही है, जीवन में।
सत्पथ पर चलते, कंटक मिलते, कभी न फिर भी, डरते हैं।
माँ दर्श तुम्हारा, लगता प्यारा, संकट पल में, हरते हैं।

- डॉ. भावना एन. सावलिया

Scanned by CamScanner

भाषा-साहित्य एवं सामाजिक विज्ञान में शोध (अनुसन्धान)

(Research in Linguistics Literature And Social Science)

सम्पादक द्वय

डॉ. भावना एन. सावलिया

हिन्दी विभाग

आर्ट्स कॉलेज, मोडासा

Dr. Mohmedhafiz Abdulhamid Kathiyara

H.O.D., Department Of Psychology
Shri S. K. Shah & Shri Krishna O. M. Arts College,
Modasa

अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य संस्थान,

गुजरात, अहमदाबाद

Scanned by CamScanner

9 788194 627999 >

ISBN : 978-81-946279-9-9

© डॉ. भावना एन. सावलिया (सर्वाधिकार लेखकाधीन)

प्रकाशक :

शुभाञ्जलि प्रकाशन
28/11, अजीतगंज कॉलोनी,
टी. पी. नगर, कानपुर-208023
मोबाइल : +91 8707872316
subhanjaliprakashan@gmail.com

संस्करण :

प्रथम - 2024

मूल्य :

हार्ड कवर : ₹ 550/- (रुपये पाँच सौ पचास मात्र)

आवरण सज्जा :

इंजी. रिन्की चन्द्रा

शब्द-सज्जा :

विद्या ग्राफिक्स, कानपुर

Research in Linguistics Literature And Social Science
Edited by
Dr. Bhawna N Savlia
Dr. Mohmedhafiz Abdulhamid Kathiyara

पुरोवाक्

साहित्य और समाज में अविनाभाव सम्बन्ध है। आदि मानव ने जब अपनी आँख खोली तो उसे समाज की महती आवश्यकता हुई और अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वह आविष्कार की ओर उन्मुख हुआ। मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जिसे प्रकृति ने बुद्धि, प्रतिभा और प्रज्ञा जैसी अन्तःशक्तियाँ प्रदान कीं जिनके माध्यम से वह आए दिन आविष्कार पर आविष्कार करता गया और आज वह साहित्य, संगीत, कला-संस्कृति और सामाजिक विज्ञान आदि विविध क्षेत्रों में अपने शोधपरक आयामों तक पहुँच चुका है। 'शोध' एक पुल्लिंग शब्द है जो शुध् क्रिया से घञ् प्रत्यय लगा कर निष्पादित होता है। जिसके अर्थ- शुद्धि, संस्कार, संशोधन और समाधान आदि होते हैं।

यह शोध साहित्य और सामाजिक विज्ञान के विषयों में एक नया संस्कारात्मक प्रादर्श खोजता है जिसके प्रतिष्ठापन से समाज और व्यक्ति उन्नयन और प्रगति के एक नव्य युग में पदार्पण करता है।

यह एक बहुत ही श्लाघनीय कार्य है जो डॉ. भावना सावलिया और डॉ. मोहमद हफीज अब्दुल हमीद कठियारा ने एक शोध-पत्रात्मक पुस्तक को प्रकाशित करने का संकल्प लिया। जिसमें अन्यान्य विषयों पर अनुसन्धानात्मक आलेख निबद्ध किए गए हैं। निःसन्देह दोनों भूरि-भूरि प्रशंसा के पात्र हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में साहित्यिक और सामाजिक विज्ञान से सम्बन्धित अनेकशः ऐसे शोध-आलेख हैं जिनमें रचनाकारों ने अपने अनुसन्धानात्मक कौशल से अपनी अमूर्त अन्तर्दृष्टि को मूर्त रूप में आकलित किया है। मैं आशा करता हूँ कि यह पुस्तक उन शोध-युक्त आन्वीक्षिकी की परिकल्पानाओं से शोधार्थियों के लिए अवश्य एक सन्दर्भ-ग्रन्थ रूप में सहायक होगी। प्रस्तुत शोध-पत्रात्मक पुस्तक में सम्मिलित रचनाकारों ने हिन्दी साहित्य एवं अन्य सामाजिक विषयों पर प्रकाशित पुस्तकों के सन्दर्भ में जो भी सूक्ष्म अनुभवों को एकत्रित कर एक सारगर्भित रूप दिया है वह निश्चित ही तत्सम्बन्धित क्षेत्र में उपादेय सिद्ध होगा। इन्हीं शुभेच्छाओं के साथ...

- डॉ. चन्द्रपालसिंह यादव

Scanned by CamScanner

सम्पादकीय कलम से

आप सबको वसंत ऋतु की ढेर सारी शुभकामनाएँ.....

साहित्य समग्र जीवन-सृष्टि के कल्याण का सिंचन करता है। साहित्य मानव जीवन मूल्यों की शिक्षा प्रदान कर मनुष्य के आंतरिक और भौतिक सुखों के विभिन्न आयामों का उत्थान करके जीवन में इन्द्रधनुषी रंग भरता है।

बिल्कुल इसी प्रकार किसी भी विषय या पक्ष पर का शोध-कार्य मानव जीवन में गहन ज्ञान का संचार करता है। बौद्धिक स्तर का विकास करता है, विश्लेषण स्तर को गति देता है, समाज और राष्ट्र की प्रगति के लिए नई दिशा प्रदान करता है। शोध पूर्वाग्रहों का निदान करके प्राप्त ज्ञान का सत्यापन करता है। पुराने सिद्धांतों का परीक्षण करके नये सिद्धांतों का निर्माण करता है। प्रस्तुत पुस्तक में भाषा-साहित्य और सामाजिक विज्ञान के विभिन्न विषयों पर शोध-पत्र लिखे गए हैं। इसमें शोधकर्ता ने छुपे हुए नये बिन्दुओं को प्रकाश में लाकर मानव और समाज के विकास में सहयोग देने का प्रयास किया है।

हमारे लिए बड़े हर्ष की बात है कि 'साहित्य और सामाजिक विज्ञान में शोध' का पुस्तक जल्दी हमारे हाथ में होगी।

आशा करती हूँ कि यह पुस्तक पाठकों शोधार्थी छात्रों के लिए मार्गदर्शन का कार्य करेगी।

सर्वेभवन्तुसुखिन: सर्वेसन्तुनिरामया:।
सर्वेभद्राणिपश्यन्तु माकश्चिद्दु:खभाग्भवेत्।।
तथास्तु।

- डॉ. भावना एन. सावलिया
हिन्दी विभाग, आर्ट्स कॉलेज, मोडासा

- Dr. Mohmedhafiz Abdulhamid Kathiyara
H.O.D., Department Of Psychology
Shri S. K. Shah & Shri Krishna O. M. Arts College,
Modasa

अनुक्रम

भूमिका

संपादकीय कलम से

१. डॉ. चन्द्रपालसिंह यादव कृत 'श्रीहनुमच्चरित' खण्ड काव्य में जीवन-दर्शन - डॉ. भावना सावलिया 7

२. डॉ. भावना सावलिया के पद्य-साहित्य का अनुशीलन - डॉ. चन्द्रपालसिंह यादव 16

३. रामदरश मिश्र के उपन्यासों में निरूपित कृषक जीवन - डॉ. पारुल ए. परमार 27

४. प्रेमचंद के उपन्यास साहित्य की विशेषताएँ - झाला गीता 34

५. साहित्य का समाज पर प्रभाव - डॉ. पूनम के. मोरी 37

६. समकालीन विमर्श में वर्तमान हिन्दी काव्य : एक अध्ययन - डॉ. उमा सिंह किसलय 41

७. डॉ. भावना सावलिया की कविताओं में भाव-सौन्दर्य (सप्त कवि संकलन के संदर्भ में) - प्रजापति आकाश के. 52

८. चन्द्रपालसिंह यादव के गद्य एवं पद्य साहित्य का संक्षिप्त अनुशीलन - डॉ. भावना सावलिया 56

९. भारतीय मनोविज्ञान और मानसिक स्वास्थ्य - परमार गिरीशभाई आर. 65

Scanned by CamScanner

डॉ. चन्द्रपालसिंह यादव कृत 'श्रीहनुमच्चरित' खण्ड काव्य में जीवन दर्शन

- डॉ. भावना एन. सावलिया

डॉ. चन्द्रपालसिंह यादव वर्तमान काल के बहुमुखी प्रतिभा संपन्न, वरिष्ठ साहित्यकार हैं। आपका जन्म १, जनवरी १९५९ में अहमदाबाद में हुआ था। आप मूलत: ग्राम- खटुआम, पत्रालय-मदनपुर, शिकोहाबाद उत्तर प्रदेश के हैं। आपने संस्कृत, हिन्दी और फिलोसॉफी विषयों में एम.ए. किया है, बी.एड. और पीएच. डी. की डिग्रियाँ भी हासिल की है। आपने उपन्यास, कहानी, एकांकी, व्याकरण, छन्दबद्ध कविताएँ, खण्ड काव्य, ग़ज़ल, रिपोर्ताज, लघुकथा संस्कृत में भी 'प्रकृत्यै नम:, 'संस्कृतेदोहावली', पुस्तकें लिखी हैं व विभिन्न विधाओं में समीक्षा भी की है। आपकी २० से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। बहुत से पुस्तकें हिन्दी साहित्य अकादमी गांधीनगर गुजरात से प्रकाशित और पुरस्कृत भी की गई हैं।

परम आदरणीय डॉ चन्द्रपालसिंह यादव जी वर्तमान युग के मूर्धन्य साहित्यकार, ख्याति प्राप्त गज़लकार, छन्दाचार्य, दार्शनिक एवं श्रेष्ठ समीक्षक हैं। आप कथा-लेखन के क्षेत्र में भी सशक्त हस्ताक्षर हैं। विलक्षण व्यक्तित्व, बाहर से कठोर भीतर से कोमल, मृदु-स्वभाव, स्पष्ट वक्ता, सत्य के पक्ष-धर, निर्भीकमना, संवेदनशील व आस्थावान हैं। आपका साहित्य सामाजिक चेतना और राष्ट्रीय चेतना का स्त्रोत है। आपका मन आध्यात्मिक जगत् में भी रमा है। परम आदरणीय डॉ चन्द्रपालसिंह यादव जी श्री रामचन्द्र भगवान के भक्त आञ्जनेय के परम भक्त हैं। इस बात का सहज और स्वाभाविक परिचय हमको आपके द्वारा पाँच सर्गों में विरचित 'श्रीहनुमच्चरित' खण्ड काव्य से मिल जाता है। साहित्य-सृजन के क्षेत्र में आप बहुमुखी प्रतिभा संपन्न क़लमकार हैं। आपकी लेखनी इतनी सक्षम है कि व्यक्ति, समाज और राष्ट्र में प्रवर्तमान दूषित भाव और बुराइयों को दूर करके

Scanned by CamScanner

नव-चेतना का संचार करती है। समाज और राष्ट्र को स्वस्थ और स्वच्छ बनाने की प्रेरणा देती है।

आपका साहित्य-जगत् बहुत ही समृद्ध है। आप छन्दों के ज्ञाता एवं छन्दाचार्य हैं। आपके छन्दबद्ध सृजन से कोई होड़ नहीं कर सकता। मैं यह बात पूरे दावे के साथ कह सकती हूँ। क्योंकि मैंने आपके सानिध्य में छन्दों का ज्ञान प्राप्त किया है। चाहे कोई भी विधा हो, गद्य हो या पद्य हो, आप एक नये अंदाज में प्रस्तुत होते हैं।

वास्तव में आपकी सोच और आपका साहित्य, समाज और राष्ट्र के लिए अँधेरे का दीपक है, मानव मन की प्रेरणा और उर्जा का स्त्रोत है।''श्रीहनुमच्चरित' खण्ड काव्य आपकी आध्यात्मिक साधना का, आपकी भक्ति का और आपकी श्रेष्ठ काव्य-कला का साक्षात् दर्शन है। पवन-पुत्र का नाम लेने के साथ ही हमको भक्ति कालीन महाकवि रामभक्त तुलसीदास द्वारा रचित 'हनुमान चालीसा' और 'रामचरितमानस' की स्मृति अवश्य आ जाती है। जिस प्रकार सुन्दर काण्ड और लंकाकाण्ड में श्रीहनुमान जी का अद्‌भुत पराक्रम और अद्वितीय कर्तव्य-निष्ठा हम में शौर्य साहस का संचार करते हैं बिल्कुल इसी प्रकार परम आदरणीय डॉ. चन्द्रपालसिंह यादव जी द्वारा रचित यह 'श्रीहनुमच्चरित' आज के युग में भटके लोगों को और निजी स्वार्थ में खोए हुए जन को बाँह थामकर सही राह दिखाने वाला खण्डकाव्य है। व्यक्ति और समाज में जनहित की भावना जगानेवाला घोष है।

साहित्य और जीवन-दर्शन :

साहित्य का व्युत्पत्तिपरक अर्थ है- 'हितेनसहितंसाहित्यम्' जिसमें जन-कल्याण की बात निहित हो वही साहित्य है।

'सहित' शब्द में 'ष्यञ्' प्रत्यय लगा कर 'साहित्य' शब्द निष्पन्न होता है। 'साहित्य' शब्द व्यापक अर्थों में प्रयुक्त होता है। जैसे-साहचर्य, भाईचारा, मेल-मिलाप, सहयोगिता, साहित्यिक या आलंकारिक रचना, रीतिशास्त्र, काव्यकला, किसी वस्तु के उत्पादन या सम्पन्नता के लिए सामग्री का संग्रह।

समाज- शब्द सम्+अज्+ घञ् इस प्रकार व्युत्पन्न होता है। जिसके अर्थ हो जाते हैं-सभा, मिलन, मण्डल, गोष्ठी, समिति या परिषद्, संख्या, समुच्य, संग्रह और दल।

साहित्य और समाज में अविनाभाव सम्बन्ध है। दोनों वस्त्र और धागे की

तरह एक-दूसरे में सम्पृक्त हैं। समाज होने से साहित्य की परिकल्पना स्वाभाविक है। यही साहित्य के लिए कहा जा सकते है। साहित्य में जीवन दर्शन की बात साहित्य को विशद बनाती है। जिसमें अध्यात्म, धर्म, संस्कृति और कला का अन्तर्भाव हो जाता है। इन सबको साहित्य समेट लेता है। साहित्य प्राणिमात्र के कल्याण का पक्षधर है। जिसका सीधा सम्बन्ध जीवन दर्शन से है। 'दर्शन' का अर्थ यहाँ जीवन-मूल्यों, सत्य असत्य और शुभ-अशुभ के सत्यापन से है; जो जीवन की सम्पूर्णता को भी इंगित करता है। विशेष अर्थ में जीवन दर्शन का तात्पर्य होगा-जीवन की फिलोसोफी। जीवन की फिलोसोफी में साहित्य का योगदान, कहा जा सकता है। साहित्य का स्फुरण ही जीवन के दर्शन से होता है जो केवल और केवल जीवन के लिए होता है।

साहित्य एक दर्पण की तरह मानव को जीवन-दर्शन को प्रतिबिम्बित कराता है। जहाँ पर आदर्शमूलक परिप्रेक्ष्य में हमें यथार्थ अवलोकित होता है।

'श्रीहनुमच्चरित' में जीवन-दर्शन' :

डॉ. चन्द्रपालसिंह यादव जी कृत 'श्रीहनुमच्चरित' सर्वश्रेष्ठ खण्ड काव्य है। प्रस्तुत खण्ड काव्य में आञ्जनेय के अद्‌भुत पराक्रम और अद्वितीय निस्वार्थ सेवा, त्याग, समर्पण, भक्ति भाव के द्वारा उत्कृष्ट जीवन का दर्शन करवा के व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र के उत्थान के लिए उदात्त संदेश दिया है। 'श्रीहनुमच्चरित' खण्ड-काव्य के मंगलाचरण से ही कवि का अद्‌भुत काव्य-सौंदर्य का और पवन-पुत्र के अद्वितीय पराक्रम से उदात्त जीवन दर्शन का सहज परिचय मिल जाता है। मंगलाचरण में कवि ने खुद स्तुति न करके वानर सेना के वयोवृद्ध जाम्बवन्त और श्रीहनुमान के पुत्र मकरध्वज के द्वारा स्तुति करवाई है। अपने पिता के विराट स्वरूप की महिमा, अंतर्बाह्य सुन्दरता, दूरदर्शिता, बौद्धिक चातुर्य और प्राणीमात्र के हित के भाव की स्तुति से ही समग्र 'हनुमच्चरित' का विलक्षण भाव-दर्शन होता है। जैसे

''हे सुदीर्घभुजलोचन! आकाशोदरगामीरिपुहर्ता,
तुम विषघ्न हो तुम ज्वरघ्न हो तुम द्विषघ्न हो जयकर्ता।।''

''देव हे पञ्चमुखी हनुमान, महाभयकारी सर्व-ललाम।
कोटि सूर्यों से बढ़कर तेज, कोटिश: मेरा तुम्हें प्रणाम।।''

Scanned by CamScanner

कवि की अपनी एक विलक्षण शैली में लिखा गया यह हनुमत् काव्य है। जिसमें मेघनाद की मृत्यु तक की कहानी श्रीहनुमान जी के विचार करने के क्रम में ही रील की तरह गुजर रही है जहाँ हनुमान सुबेल पर्वत पर श्रीराम की कुटिया में सो रहे राम-लक्ष्मण की सुरक्षा में सजग बैठे हुए हैं। कवि की यह स्वनिर्मित शैली काव्य-कथा को अनुपम बना रही है। जैसे-

''राम-लखन की कड़ी सुरक्षा को कठोर आकार दिया।
गुप्त शिविर में पवनपुत्र को देखभाल का भार दिया।।

बने अभेद्य पूँछ के घेरे को दीवारों के अन्दर।
थे हनुमान सचेत राम-लक्ष्मण की शैया को रखकर।।''

(पृष्ठ. १९.)

कवि की यह अपनी उद्भावना एक विशेष की रेखा खींच देती है। जाम्बवन्त द्वारा श्रीहनुमान जी को शिव के ग्यारहवें रुद्र का अवतार बताकर उन्हें उनकी स्तुति रूप में बल और सामर्थ्य की स्मृति दिलाना अनुचित नहीं लग रहा, बल्कि चार चाँद लगा रहा है। सागर लाँघने से लेकर श्रीराम के पास लौटने तक के प्रसंगों को कवि ने अपनी तूलिका से विविध भावों के रंग भर कर 'श्रीहनुमच्चरित' को ऐसी ही अन्य हनुमत् काव्यों से विलग कर दिया है। कवि का कल्पना-गौरव श्लाघ्य है। जैसे-

''बड़े वेग से उड़ा गगन में पावकास्त्र ज्यों चलता हो।
या अमोघ श्रीरामचन्द्र का महा-शस्त्र ज्यों चलता हो।।''

(पृष्ठ-२६)

यहाँ पर हनुमान जी की सीतान्वेषण के समय आकाश में उछलने की विराट चेष्टा और वेगवान शक्ति का दर्शन होता है। पूँछ में आग लगाने की बात को अन्य ग्रन्थों से अलग ही कवि ने अपना काव्याकर्षण प्रस्तुत किया है। जैसे -

''धीरे-धीरे बन्धन ढीले करता गया सुभीते से,
क्षण भर में सम्पूर्ण जला दी लंका एक पलीते से।।
त्राहिमाम् मच गया चतुर्दिक असुरों की उस लंका में।
सब कुछ जलकर भस्म हो गया वानर की आशंका में।।''

(पृष्ठ. ५७)

यहाँ पर लंका-दहन करके हनुमान जी ने अपने अद्भुत पराक्रम का परिचय दिया है।

मूर्च्छित लक्ष्मण के लिए द्रोणागिरि पर बूटी लेने जाना, भरत के द्वारा बाण मारना आदि सब बड़े ही रोचक ढंग से पेश किए हैं। इन सभी प्रसंगों में अत्याधुनिकता झलक रही है। कवि का एक नया अंदाज और नूतन शैली देखिए : जैसे-

''जा रहा था मैं लिए पहाड़, अवध के ऊपर से जिस काल।
भरत ने देखा समझा और निशाचर मुझको एक विशाल।
भरत ने मुझ पर फिर तत्काल, बिना फल वाला मारा बाण।
गिर पड़ा नीचे लिए पहाड़, राम को जपता मैं हनुमान।।''

(पृष्ठ. ८७)

अहिरावण का श्रीराम-लक्ष्मण का हरण करने आने का चित्रण तो अति रोमहर्षक है। श्रीराम और लक्ष्मण का परस्पर संवाद वास्तव में श्री राम को मर्यादा पुरुषोत्तम सिद्ध कर देता जैसे-

''राम ने किया लखन को शान्त, न करिए इतना क्रोध अथोर।
चुराने हम दोनों को दैत्य, आ रहा अहिरावण इस ओर।''

(पृ ९९)

राम की लोककल्याण की भावना देखिए -

''आत्म-चिंतन करिए कुछ भ्रात, शेष के तुम हो अवतार।
हमें पाताल-लोक के जीवधारियों का करना उद्धार।।''

''देखिए पवनपुत्र ध्यानस्थ, हरण का करना मत प्रतिकार।
पहुँच कर हमें वहाँ पाताल लोक का करना है उद्धार।।''

(पृष्ठ १००/१०१)

भव के बन्धन को काटने वाले श्रीराम को बाँधकर मूर्ख अहिरावण महान अपराध कर रहा था-

''काट देते हैं जो भव-बन्ध, कौन सकता है उसको बाँध।
मूर्ख अहिरावण को क्या ज्ञात, कर रहा था महान अपराध।।
मानवोचित कार्यों को किन्तु, कर रहे थे पुरुषोत्तम राम।
चले आए वह चुरकर साथ, असुर के सर्पों के इस धाम।।

Scanned by CamScanner

कालिका का मन्दिर था अग्र, सामने बँधे खड़े थे राम।
वहीं लक्ष्मण थे बँधे समीप उगलते क्रोध-गरल अविराम।।"

(पृष्ठ १०२)

जब हनुमान राम-लक्ष्मण को लेने अहिरावण के राज्य पाताल-लोक पहुँचे तब वहाँ के अद्‌भुत जीव थे। मानव का मुख और शरीर सर्प का था। उसका अजीब सा व्यवहार देखकर पवन-पुत्र अधीर हो गए थे। उस पाताल-लोक के जीव अहिरावण को भगवान मानते थे।

श्रीहनुमान जी श्री राम भगवान की लीला को पहचान लेते हैं कि अहिरावण का वध करके पाताल-लोक के जीवों का उद्धार करने के लिए उन्होंने जानबूझ कर अपना अपहरण होने दिया था। तब हनुमान जी मुदित मन से सोचते हैं -

"चले हर्षित होकर हनुमान, प्रभो की इच्छा है बलवान।
सभी होता उनके अनुसार, सभी का उनके हाथ निदान।।"

(पृष्ठ.१०५)

पाताल-लोक के द्वार के प्रहरी बलवान मकरध्वज श्रीहनुमान के साथ युद्ध में पराजित होता है। हनुमान से उसका परिचय पूछने पर मकरध्वज अपना परिचय वीरता से और गरिमामय शैली में देता है -

"द्वारपाल ने कहा- "वीरता ही है वीरों की पहचान।
मकरध्वज है नाम पिता मेरे कपि-श्रेष्ठ वीर हनुमान।।"

(पृष्ठ. १०७)

पिता अपने पुत्र के जन्म का रहस्य जानते हैं और दोनों का सुखद मिलन होता है। इसके के बाद मकरध्वज के सुझाव के अनुसार हनुमान मक्खी का रूप धारण करके कामाक्षी मन्दिर में जाकर अहिरावण की आराध्या कामाक्षी देवी को प्रसन्न करके "विजयी भव" का आशीर्वाद प्राप्त कर लेते हैं। जैसे-

"प्रकट हुई कामाक्षी देवी बोली वह देती वरदान।
विजयी हो तुम राम-कार्य में मैं प्रसन्न हूँ हे हनुमान।।"

(पृष्ठ.१०८)

बार-बार मरने पर भी अहिरावण जीवित हो जाता था तब श्रीहनुमान जी उसका रहस्य नागकन्या चित्रसेना से जानते हैं। वह अपनी शर्त रखकर बताती है :

"पवनसुत को कर दी अभिव्यक्त, नागकन्या ने अपनी चाह।
"आप अहिरावणवधोपरान्त, राम के साथ करा दें व्याह।।"
रखा मारुति ने भी अनुबंध, "संविदा हो जाएगी भंग।
मिलन के समय राम के साथ, गया यदि टूट कदापि पलङ्ग।।"

यहाँ पर चित्रसेना की सोच में स्वतंत्र विचारोंवाली आधुनिक नारी की झलक दिखाई देती है। श्री हनुमान जी का बौद्धिक चातुर्य का दर्शन भी होता है। सभी भ्रमरों को मार देने पर बचे एक भ्रमर को इस शर्त पर जीवन दान दे देते हैं कि चित्रसेना अहिरावण के साथ जिस पलंग पर विश्राम करती है उसे खोखला कर दे।

अंत में हनुमानजी ने अहिरावण के बन्धन से राम-लक्ष्मण को मुक्त करने के लिए अपना अद्‌भुत बल, शौर्य, साहस, शक्ति एवं अपनी रहस्यमय लीला से सभी मर्यादाओं का पालन करते हुए अहिरावण का बड़ी सावधानी से नाश करते हैं। जैसे -

"बनूँ मैं पञ्चमुखी हनुमान, बुझा दूँ युगपत् सभी प्रदीप।
मृत्यु को हो अहिरावण प्राप्त, समय हो यूँ अनुकूल, प्रतीप।।"

हनुमान जी का ऐसा महाभयकारी रूप का दर्शन करने से मकरध्वज हाथ जोड़कर और शीश नमा कर हनुमान जी की महिमायुक्त स्तुति करने लगता है। जो प्रस्तुत काव्य के लिए कवि की यह एक विलक्षण सोच और नया अंदाज है। जैसे -

"देव हे पञ्चमुखी हनुमान, महाभयकारी सर्व-ललाम।
कोटि सूर्यों से बढ़कर तेज, कोटिश: मेरा तुम्हें प्रणाम।।
हाथ दश शोभित तेरह नेत्र, स्वर्ण-सम देह विराट ज्वलन्त।
मनोवांक्षा करते हो पूर्ण, आपदाओं का करके अन्त।।
युक्त दाढ़ों-दाढ़ी से वक्त्र, भृकुटि को टेढ़ी करके दृष्टि।
काल को भी करती भयभीत, कृपा की भक्त-जनों पर वृष्टि।।"

(पृष्ठ : ११६)

अहिरावण के साम्राज्य का अंत होने से समग्र पाताल लोक बहुत हर्षित होता है। राम, लक्ष्मण और हनुमान जी की जय-जयकार होती है। राम अपनी करुणा दृष्टि से सबके भय का हरण करते हैं और अपनी कृपा दृष्टि से सबका कल्याण करते हैं। हनुमान जी अपने शुभ काम में सफलता प्राप्त करते हैं, सबका

Scanned by CamScanner

प्रेम-भाव प्राप्त करते हैं और श्रीराम के श्रीचरणों में शीश झुकाकर श्रीराम का आशीर्वाद और स्नेह प्राप्त करते हैं। इसके बाद प्रेम से गद-गद हुए श्रीहनुमान जी श्रीराम और लक्ष्मण को अपने पुष्ट कंधों पर बिठाकर पृथ्वी लोक पर आते हैं।

समग्रत: देखा जाए तो 'श्रीहनुमच्चरित' खण्ड काव्य जीवन दर्शन के स्तर पर महाकवि तुलसीदास कृत 'श्रीरामचरितमानस' की श्रेणी में अपना स्थान रखता है। 'श्रीहनुमच्चरित' प्रारंभिक मंगलाचरण से लेकर अंत तक गरिमामय, उदात्त जीवन दर्शन का पर्याय है ऐसा कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है। नारी, व्यक्ति, समाज, और राज्य, धर्म की सभी मर्यादाओं का विनीत भाव से पालन करके अपना कर्तव्य निस्वार्थ भाव से बखूबी निभाया है। श्रीहनुमान जी सच्चे नायक, श्रेष्ठ सेवक और कर्त्तव्यनिष्ठ शूरवीर हैं। वो व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र की चेतना है। आज के हतोत्साहित नौजवानों की उर्जा का स्त्रोत हैं जो स्वस्थ समाज एवं उदात्त राष्ट्र के लिए प्रेरणा है।

अहिरावण का प्रसंग यद्यपि वाल्मीकि रामायण और रामचरित मानस में नहीं है तथापि स्कंद पुराण, आनन्द-रामायण और कृत्तिवास रामायण में अहिरावण की कथा का प्रसंग मिलता है। जिनमें अहिरावण को रावण का बड़ा भाई या सौतेला भाई दर्शाया गया है। कुछ भी हो सनातन धर्म के आधार पर पंचमुखी हनुमान का होना अहिरावण के बध के समय ही सिद्ध होता है। जिसमें कवि ने 'श्रीहनुमच्चरित' खण्डकाव्य की कथा को श्रेय दिया है। श्रीहनुमान जी इस खण्डकाव्य के महानायक हैं जो अपने प्रभु श्रीराम और बन्धु लक्ष्मण की प्राण-रक्षा के लिए पाताल लोक तक जाते हैं। यह कथा भी वर्तमान के परिदृश्य में प्रचलित कथा को अद्भूतता प्रदान करती है। पाताललोक के प्रहरी के रूप उनके ही पुत्र मकरध्वज द्वारा पंचमुखी हनुमान की स्तुति कथानक को नवीनता प्रदान करती है। अन्त में भी मकरध्वज द्वारा 'श्रीहनुमच्चरित' के माहात्म्य का गायन अपनी अमिट छाप छोड़ देता है। यह है 'श्रीहनुमच्चरित' के कथानक की समकालीन विमर्श में वर्तमान हिन्दी- काव्य-धारा में आदर्श जीवन दर्शन की एक झलक, जिसमें कथासूत्र की प्राचीनता में भी एक वर्तमान काव्य की खनक शब्दायमान होती दिखती है।

युग और काल बदलते गए किन्तु मानव वही रहा। भले ही संस्कृति और सभ्यता में कुछ बदलाव आए लेकिन परिस्थितियाँ कुल मिलकार वही रहीं। लूट-खसोट, अधिनायक की भावना, शोषण, अनाचार-अत्याचार, कदाचार, नारी

का अपमान, भ्रष्टाचार आदि की समस्याएँ हर युग और देशकाल में रही हैं। जन-सामान्य सदैव कुचला जाता रहा है। प्रभुसत्तावाद सदैव जोर पकड़ता रहा है। अतएव युद्धों के प्रसंग जन-मानस में आज तक अपने इतिहास को लेकर गूँजते रहे हैं। श्रीराम के त्रेतायुग में भी इस दुनिया और इतर दुनिया में भी समान परिस्थितियाँ बनी हुई थीं। इसीलिए पौराणिक और धार्मिक मान्यताओं के अनुसार श्रीराम का अवतार मानव-समाज के सर्वांगीण उत्थान के लिए माना गया।

श्रीराम ने स्वेच्छा से अहिरावण द्वारा चुरकर पाताललोक या यूँ कहिए इस समय के ब्राजील और अमेरिका में जाकर अहिरावण के बध से वहाँ के सर्वहारा वर्ग को यातना-प्रताड़नाओं से मुक्ति दिलाई और मानवीय मूल्यों का रक्षण किया। वह आए तो थे अपनी पत्नी को रावण से मुक्त कराने के लिए लेकिन उन्होंने उससे पहले लोकहित को सर्वोपरि समझा।

हिन्दी विभाग
आर्ट्स कॉलेज मोडासा

Scanned by CamScanner